ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–९७
दिनांक- मंगलवार, २७ दिसम्बर, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 23.9 एवं 11.9 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 57 प्रतिशत, हवा की औसत गति 1.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.4 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 14.7 एवं दोपहर में 24.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(28–31 दिसम्बर, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 28–31 दिसम्बर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उत्तर पश्चिम भारत में अनुकूल मौसमीय सिस्टम के प्रभाव से ठण्ड बढ़ने, हवा में अधिक नमी एवं लगातार पछिया हवा चलने से उत्तर बिहार के जिलों में ठण्ड बढ़ने की सम्भावना है। सुबह में हल्के से मध्यम कुहासा छा सकता है। आसमान में हल्के बादल एवं मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है।
- 31 दिसंबर तक न्यूनतम तापमान में 3–5 डिग्री सेल्सियस गिरावट आ सकती है। जिसके चलते न्यूनतम तापमान 6–7 डिग्री सेल्सियस के आसपास आने की सम्भावना है। अधिकतम तापमान में भी गिरावट के साथ इसके 20–22 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है।
- पूर्वानुमानित अवधि में धीमी रफ्तार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 60 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमान की अवधि में न्यूनतम तापमान में गिरावट आ सकती है जिसके कारण तापमान सवेंदनशील फसलों जैसे– टमाटर, मटर एवं आलू की फसल में काम नमी के कारण बुरा असर पड़ सकता है। इन फसलों के खेतों में नमी बनाये रखें।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। अगात बोयी गयी मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गेहूँ की फसल जो 40 से 45 दिनों की हो गई है तो उसमें दूसरी सिंचाई कर 30 किलो ग्राम नेत्रजन का प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें ।
- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हों गयी हो उसमे सिंचाई के बाद 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्रम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद् को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में अंकुरण के दो सप्ताह बाद फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूरान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा दें। अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें। नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई मक्का की फसल जो 50 से 60 दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें।
- सरसो की फसल जो पुष्प अवस्था में है। उसमें सफेद हरवा रोग (white rust) कि निगरानी करे। इस रोग मे पतियों के निचले सतह पर छोटे छोटे उजले या हलके पीले रंग के धब्बे दिखाई पड़ते है, जिससे उपज मे भाड़ी कमी आ सकती है। फसल मे इस रोग को आक्रमण होने पर मैन्कोजेन 75ः घुलनसील चुर्ण का 2 ग्राम प्रति लीटर के दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सरसो की फसल जो पुष्प अवस्था को पार कर चुकी हैं, उसमें सरसों लाही की नीगरानी करे इस कीट के आक्रमण से उपज में भारी कमी आ सकती हैं। इस कीट का प्रकोप फसल में दिखाई दे तो पीले चिपचीपे फंद (फोरौमॉन ट्रैप) का 50–100 प्रति एकड़ की दर से करें, ज्यादा नुकसान होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.6 SL 1 मि0 ली0 प्रति 3 ली0 पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू की फसल से खरपतवार निकालें एवं आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगराणी करें।
- पिछात मटर में निकाई–गुराई करें। मटर में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्याधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी बैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः 22.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.7 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 10.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)